

## जलवायु परिवर्तन एवं LiFE

यह एडिटरियल 20/10/2022 को 'द हट्टू' में प्रकाशित "A new lease of LIFE for climate action" लेख पर आधारित है। इसमें जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण से संबंधित चुनौतियों से निपटने के लिये भारत की LiFE पहल की भूमिका के बारे में चर्चा की गई है।

### संदर्भ

भारत की 'पर्यावरण के लिये जीवनशैली' ([Lifestyle for the Environment- LiFE) पहल पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवनशैली की दृष्टि में एक जन आंदोलन के रूप में उभरी है। कोविड-19 ने यह उजागर कर दिया कि मानव जाति की उल्लेखनीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के बावजूद हम अभी भी प्राकृतिक जगत की दया पर निर्भर हैं।

- वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरा पहले की तुलना में कहीं अधिक गंभीर हो गया है। अपव्ययी उपभोक्तावाद (wasteful consumerism) से प्रेरित उपभोक्तावादी समाज (throwaway society) इस गहराते संकट के लिये समान रूप से दोषी है।
- स्विस रे (Swiss Re) के अनुसार, यदि जलवायु कार्रवाई नहीं की गई तो वैश्विक अर्थव्यवस्था वर्ष 2050 तक सकल घरेलू उत्पाद का 18% तक गँवा सकती है। यह परदृश्य संवहनीय और पर्यावरण-अनुकूल अभ्यासों की ओर संक्रमण की एक प्रकट आवश्यकता रखता है।

### LiFE पहल क्या है?

- LiFE का वचन भारत द्वारा वर्ष 2021 में ग्लासगो में आयोजित 26वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP26) के दौरान पेश किया गया था।
- यह वचन पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवनशैली को बढ़ावा देने पर बल देता है जो 'विविकहीन एवं अपव्ययी उपभोग' के बजाय 'विविकपूरण एवं वचनपूरण उपयोग' पर केंद्रित है।

### पर्यावरण संरक्षण के वषिय में भारत की उपलब्धियाँ

- स्थापित वदियुत क्षमता:** भारत द्वारा स्थापित वदियुत क्षमता का 40% गैर-जीवाश्म स्रोतों से प्राप्त करने की प्रतिबद्धता को निर्धारित समय से 9 वर्ष पहले ही प्राप्त कर लिया गया है।
- इथेनॉल मशिन लक्ष्य:** पेट्रोल में 10% इथेनॉल मशिन का लक्ष्य निर्धारित समय (नवंबर 2022) से 5 माह पूर्व ही प्राप्त कर लिया गया है।
  - यह एक बड़ी उपलब्धि है, क्योंकि वर्ष 2013-14 में यह सम्मशिन महज 1.5% और वर्ष 2019-20 में 5% रहा था।
- नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य:** REN21 की नवीकरणीय वैश्विक स्थिति रिपोर्ट (GSR 2022) के अनुसार भारत वर्ष 2021 में स्थापित क्षमता के मामले में पवन ऊर्जा में तीसरे, सौर ऊर्जा में चौथे और नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता में तीसरे स्थान पर रहा।

### भारत में पर्यावरण से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ

- घटते वन, घटती आजीविका:** गरीबी और पर्यावरणीय क्षतिके बीच एक संबंध पाया जाता है। हमारी आबादी का एक बड़ा भाग खाद्य, ईंधन, आश्रय और चारे की अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिये देश के प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है।
  - पर्यावरण क्षरण ने गरीबों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है जो अपने आसपास के संसाधनों पर निर्भर होते हैं। इस प्रकार गरीबी की चुनौती और पर्यावरण क्षरण की चुनौती एक ही चुनौती के दो तथ्य हैं।
- स्वस्थ पर्यावरण का आप्लावन:** वन नदियों के लिये जलग्रहण क्षेत्र के रूप में योगदान करते हैं। जल की बढ़ती मांग को देखते हुए वृहत सचिवाई परियोजनाओं के माध्यम से विशाल नदियों के दोहन की योजना बनाई गई है। निश्चित रूप से, ये वनों को जलमग्न कर सकते हैं, स्थानीय लोगों को वसिस्थापित कर सकते हैं और वनस्पतियों एवं वन्यजीवों को क्षति पहुँचा सकते हैं।
  - इसके साथ ही, भारत में कई शताब्दियों से कृषि और अन्य उपयोगों के दबाव के कारण वन क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे हैं। विशाल क्षेत्र जो कभी हरे-भरे थे, आज बंजर भूमि के रूप में पड़े हैं।
- अन्यमति खनन गतिविधियाँ:** निर्माण सामग्री की भारी आवश्यकता की पूर्ति हेतु उत्खनन और अन्य खनन गतिविधियों के कारण कई पहाड़ियाँ



PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/climate-change-and-life>

